कम उम्र में दाँतों की जाँच शुरू करें

बच्चों के दाँतों की स्थितियाँ उनके स्वास्थ्य, मनोवैज्ञानिक विकास और सामाजिक जीवन को प्रभावित करेंगी। इसलिए, माता-पिता को अपने बच्चों के मौखिक स्वास्थ्य की स्थितियों को कतई नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

बच्चों के दाँतों की पहली जाँच

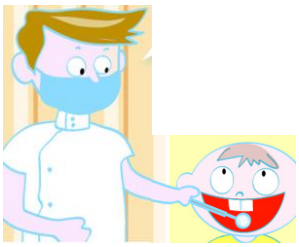

बच्चे का पहला दाँत निकलने के बाद 6 महीने के भीतर माता-पिता को उसे दाँतों की पहली जाँच के लिए दंत चिकित्सक के पास लेकर जाना चाहिए। दरअसल, बच्चे की सामान्य जाँच की जाएगी।

बच्चों के लिए सुखद अनुभव बहुत महत्वपूर्ण है

जाँच के प्रति बच्चों का डर आमतौर पर एक अपरिचित माहौल के लिए उनके डर की वजह से होता है। इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि दाँतों की जाँच के लिए जाने से पहले माता-पिता अपने बच्चों को दाँतों की जाँच के बारे में रोचक चीज़ें बताएँ। ऐसा करने पर, बच्चों में जाँच के लिए रुचि जगती है और मनोवैज्ञानिक रूप से परीक्षण के लिए तैयार हो जाते हैं।

दर्द के प्रति बच्चों का डर भी जाँच के लिए उनके डर का एक कारण है। इसलिए माता-पिता को अपने बच्चों की आम ज़िन्दगी में उन पर दाँतों की भराई या दाँत निकलवाने के लिए ज़ोर नहीं डालना चाहिए, नहीं तो वे दाँतों की जाँच से इनकार कर सकते हैं। एक सुखद अनुभव (विशेष रूप से पहली बार में ही) बच्चों में दाँतों की नियमित जाँच की आदत डालने और दंत चिकित्सकों पर उनके भरोसे को बढ़ाने में मददगार होगा।

दाँतों की नियमित जाँच के कई फ़ायदे हैं

दंत चिकित्सक निम्न काम कर सकता है:

1. दाँतों के विकास की स्थिति को विस्तारपूर्वक रिकॉर्ड करना (वरीय रूप से हर छह महीने के अंतराल पर);
2. माता-पिता को आहार-संबंधी सलाह देना ताकि उनके बच्चों के मौखिक स्वास्थ्य में सुधार किया जा सके;
3. दाँतों में गड्ढों और दूध की दाढ़ों में दरारों को ढकने के लिए फिशर सीलेंट लगाना ताकि दाँतों के सड़ने की संभावना को कम किया जा सके;
4. दाँतों की किसी बीमारी का जल्द ही पता लगाना और उसका इलाज करना।